पाठ - 7

बलिदान

(कथा सागर)

पृष्ठ संख्या -37

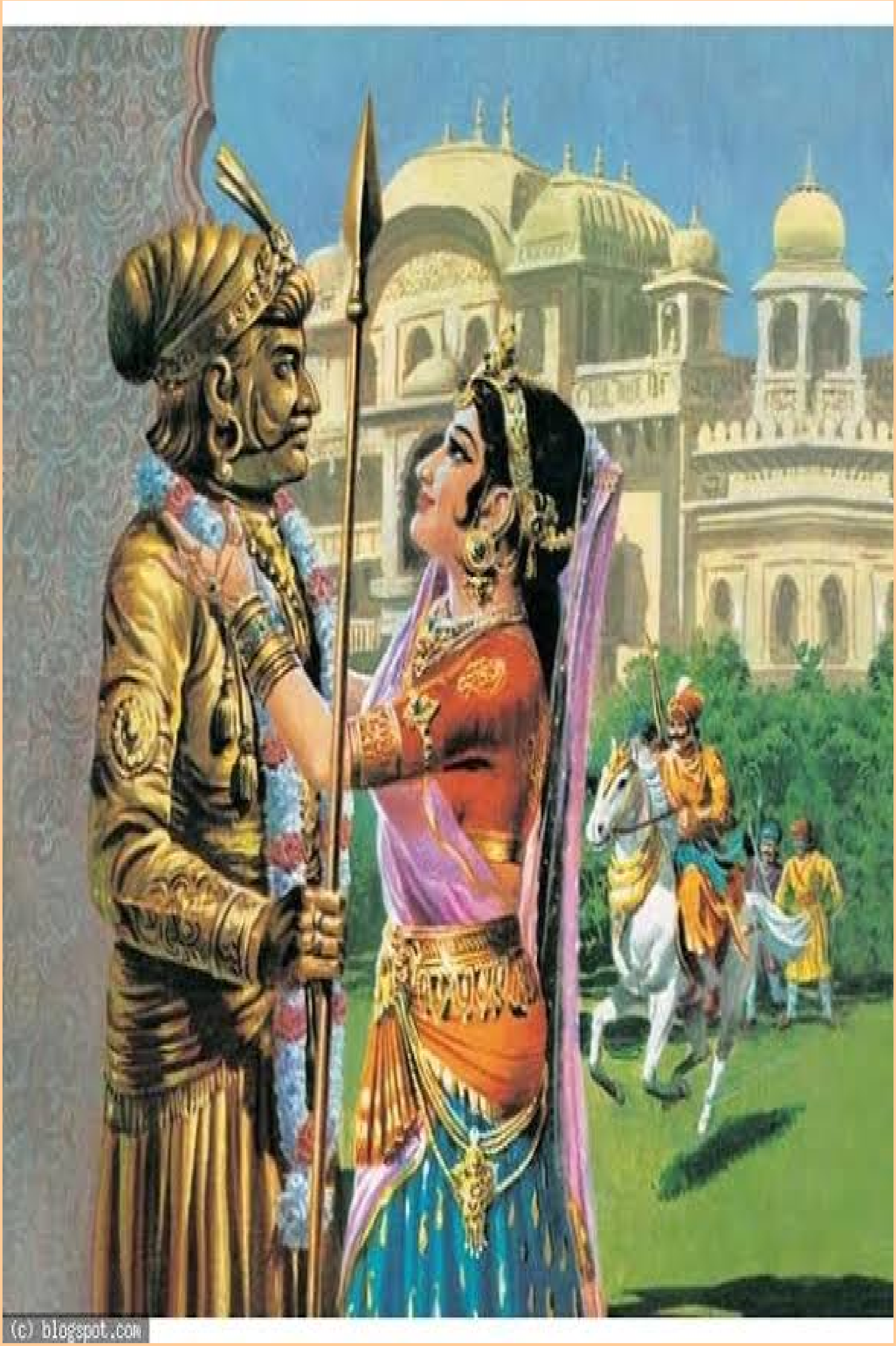
(c) blogspot.com

7

बलिदान

भारत की भूमि पर अनेक योद्धाओं और वीरों ने जन्म लिया है। उन्होंने अपने दुश्मन को धूल चटाकर विजयश्री प्राप्त किया एवं कभी अपने प्राणों की परवाह नहीं की। हमारे इन योद्धाओं ने वीरगति प्राप्त किया, सदियाँ बीतने के बाद भी वे अमर हैं।

श्रावण का महीना था। मुहम्मद गौरी नौ लाख सैनिकों के साथ भारत पर चढ़ आया और किले पर किले जीतता हुआ दिल्ली के पास तक पहुँच गया। महाराज पृथ्वीराज अब भी दिल्ली के राजसिंहासन पर थे। पर अब दिल्ली वह दिल्ली न थी, जिसमें सिंह गरजते थे। अब तो दिल्ली वह दिल्ली थी, जो अय्याशी की गोद में बैठकर प्रेम के सितार बजा रही थी। सम्राट के भवन से लेकर नगर के घर-घर तक में अय्याशी का ही रंग छाया हुआ था। सेना बिखर चुकी थी। बहुत-से वीर सेनापतियों ने नाराज होकर दिल्ली छोड़ दी थी।

चित्तौड़गढ़ के राणा साँगा को जब यह समाचार मिला, तो वे चिंतित हो उठे। वे शीघ्र ही दिल्ली पहुँचे। उन्होंने पृथ्वीराज से मिलकर उनकी खूब भर्त्सना की। पृथ्वीराज की रगों में बिजली दौड़ पड़ी। वे सेना का संगठन करने में जुट गए। जो वीर सेनापति नाराज होकर चले गए थे, उनके पास दूत भेजे गए। चंदवरदाई काँगड़े गया। पर वह वहाँ के मंदिर में कैद कर लिया गया।

पृथ्वीराज सेना का संगठन करके मैदान में जा कूदे। उन्होंने बड़ी वीरता से युद्ध किया पर उन्हें विजय न मिली। वे हार गए और कैद कर लिए गए। एक दिन जिस मुहम्मद गौरी ने उनसे क्षमा की भीख माँगी थी, वही उन्हें कैद करके गजनी ले गया।

पृथ्वीराज जेल में डाल दिए गए। जेल में पृथ्वीराज को इतना दुख सहना पड़ा कि उनकी दोनों आँखें भी जाती रहीं।

चंदवरदाई जब काँगडे के मंदिर से किसी तरह छूटा, तब वह धावे पर धावे मारता हुआ दिल्ली पहुँचा। पर तब तक दिल्ली उजड़ चुकी थी। दिल्ली पर मुहम्मद गौरी का कब्जा

हो चुका था। चंदवरदाई रो उठा। इस खबर को सुनकर तो उसका कलेजा बाहर निकल आया कि पृथ्वीराज बंदी बनाकर गजनी ले जाए गए हैं और जेल में डाल दिए गए हैं।

चंदवरदाई भेष बदलकर गजनी की ओर चल पड़ा। गजनी पहुँचकर उसने देखा, नगर के चारों ओर कोसों तक फौजें खड़ी हैं। चारों ओर हाथी, घोड़ों और ऊँटों की कतारें खड़ी हैं।

चंदवरदाई भयभीत न हुआ। वह बड़ी **चालाकी** से बचता-बचाता नगर में बादशाह के महल के पास पहुँच गया। बादशाह के महल के द्वार पर हथियारबंद पहरेदारों का कड़ा पहरा था।

वह छिपता-छिपाता बादशाह से मिलने की **चेष्टा** करने लगा।

आखिर, एक दिन रास्ते में चंदवरदाई की बादशाह से भेंट हो गई। उसने बादशाह को अपना परिचय दिया। बादशाह ने उससे पूछा– “तुम क्या चाहते हो?” चंदवरदायी ने कहा– “अब जीवित रहने की इच्छा नहीं है। मरने से पहले यह देखना चाहता था कि जिसने पृथ्वीराज जैसे वीर को बंदी बनाया है, वह कैसा है। आज वह भी इच्छा पूरी हो गई। अब यहाँ से सीधा हिमालय की ओर चला जाऊँगा।”

बादशाह ने कहा– “मुझे **अफसोस** है चंद! पर आज तुम रहो, कल मैं दरबार में तुमसे भेंट करूँगा।”

दूसरे दिन चंद को दरबार में बुलाया गया। बादशाह ने पूछा– “अब कहो चंद, तुम क्या चाहते हो?”

चंद ने उत्तर दिया– “केवल एक ही चीज के लिए इतनी दूर चलकर आया हूँ।”

बादशाह ने कहा– “अगर वह चीज पृथ्वीराज न हुआ, तो मैं तुम्हें जरूर दूगाँ।”

चंदवरदाई ने कहा– ”पृथ्वीराज को मैं नहीं माँगता श्रीमान् पृथ्वीराज ने अपने बचपन में शब्दवेधी बाण के द्वारा गोल चक्र में रखकर सात हाँड़ियाँ फोड़ने की प्रतिज्ञा की थी। मेरी प्रार्थना है कि आप उनकी प्रतिज्ञा को पूर्ण कर दें।”

30

बादशाह ने ठहाका लगाकर कहा– "पर पृथ्वीराज तो अंधा हो चुका है। वह तीर कैसे चला सकता है?" चंदवरदई ने चालाकी से काम लिया। उसने कहा– "श्रीमान, आप मुझे यह वचन दे चुके हैं कि पृथ्वीराज को छोड़कर मैं जो मागूँगा, आप देंगे।" बादशाह ने कुछ सोचकर 'हाँ' कह दिया।

चंद की इच्छा के अनुसार बादशाह ने उसे पृथ्वीराज के पास कारावास में भेज दिया। दोनों बड़े प्रेम से मिले। एक-दूसरे को अपने आँसूओं से भी भिगोया हो तो आश्चर्य क्या?

चंद ने पृथ्वीराज को सारी बातें बताकर धीरज से काम लेने के लिए कहा। वह वहाँ से लौटकर बादशाह से मिला। उसने बादशाह को इस बात के लिए तैयार कर लिया कि वह स्वयं बाण छोड़ने के लिए आज्ञा देगा।

दूसरे दिन दरबार सजा। दरबार में वजीर और सिपाही सभी बुलाए गए। स्वयं बादशाह भी सिंहासन पर आकर बैठा। दरबार के बीच में सात हाँड़ियों को गोल चक्र में लटका दिया गया।

पृथ्वीराज भी लाए गए। उनके हाथ में धनुष-बाण दे दिया गया। पृथ्वीराज ने धनुष पर बाण चढ़ाया चंदवरदाई ने कहा– "अब न चूक चौहान!"

बादशाह बोल उठा– "छोड़ो।"

बादशाह के मुख से 'छोड़ो' शब्द निकला ही था कि पृथ्वीराज का बाण बादशाह के कलेजे को छेदकर पार निकल गया। बादशाह मुहम्मद गोरी लुढ़ककर भूमि पर गिर पड़ा। चारों ओर हाहाकार मच गया। जब तक लोग चंद और पृथ्वीराज के पास पहुँचे, लोगों ने देखा कि दोनों ने कटार से अपना काम तमाम कर लिया था। चंद और पृथ्वीराज का यह बलिदान देश पर मिटने वालों को सदा प्रेरणा देता रहेगा।

शिक्षा **हमारे देश की आज़ादी में हजारों-लाखों लोगों ने अपने प्राणों का बलिदान दिया। हम तन मन एव धन से इस आजादी की रक्षा करेंगे। प्रत्येक नागरिक के हृदय में देश प्रेम एवं समर्पण की भावना जागृत होनी चाहिए।**

39

Chand Bardai to Prithvi Raj Chauhan:
"चार बांस चौबीस गज, अंगुल अष्ट प्रमाण,
ता ऊपर सुल्तान है मत चूकें चौहान।"
Mohammad Gauri : Matlab??
Prithvi Raj : Matlab mera lawda.
@up_ke_meems
*मुहम्मद गौरी
*पृथ्वीराज